टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ

अभिमत विद्यापीठ
विद्यापीठ भवन, गुलटेकडी, पुणे - ४११०३७
दूरध्वनी क्र. २४२६६७००, २४२६१८५६, २४२६४६९९

दूरशिक्षण विद्याशाखा

अभ्यासक्रम

एम. ए. हिंदी

अभ्यासक्रम

कालावधी - २ साल

कूल प्रश्नपत्र - ८ (प्रति वर्ष ४)

अंक - प्रति प्रश्नपत्र १०० अंक,

कूल अंक - ८००

विशेष सूचना - विद्यापीठ नियम के अनुसार हर साल प्रथम और द्वितीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों के लिए भाग १ तथा भाग २ में से उस साल जो भाग निर्धारित हुआ है, उसी को प्रवेश लेना अनिवार्य है। उदा.

	प्रवेश का साल (प्रथम तथा द्वितीय दोनो वर्षो के विद्यार्थियों के लिए)
भाग १	२००९-२०१०, २०११-२०१२, २०१३-२०१४ इ.
भाग २	२०१०-२०११, २०१२-२०१३, २०१४-२०१५ इ.

- मार्गदर्शक अध्ययन साहित्य उपलब्ध
- पुने में अध्ययन हेतू जनवरी महिने में संपर्कसत्र का आयोजन

परीक्षासंबंधी नियम तथा सूचनाएँ -

प्रश्नपत्र का स्वरूप -

कूल अंक - १००, **अवधी** - ३ घंटे **कूल प्रश्न** - ५

प्रश्न १ - दीर्घोत्तरी प्रश्न (अ) अथवा (ब)

प्रश्न २ - दीर्घोत्तरी प्रश्न (अ) अथवा (ब)

प्रश्न ३ - दीर्घोत्तरी प्रश्न (अ) अथवा (ब)

प्रश्न ४* - दीर्घोत्तरी प्रश्न (अ) अथवा (ब)

प्रश्न ५ - टिप्पणी (चार में से कोई भी दो)

* (जिस प्रश्नपत्र में ससंदर्भ व्याख्या का प्रश्न संभव है उस प्रश्नपत्र में चौथा प्रश्न ससंदर्भ व्याख्या का रहेगा। उस प्रश्न के अंतर्गत चार उपप्रश्नों में से किसी भी दो उपप्रश्नों के उत्तर अपेक्षित होंगे)

परीक्षासंबंधी नियम -

परीक्षा की पद्धती - वार्षिक

अपेक्षित काल - मे महिने में

उत्तीर्णता के लिए प्रत्येक प्रश्नपत्र में आवश्यक कम से कम अंक - १०० में से ४०

ATKT - प्रथम वर्ष की परीक्षा में अनुत्तीर्ण या अनुपस्थित रहनेवाले छात्र द्वितीय वर्ष में प्रवेश पा सकते हैं।

श्रेणी व्यवस्था -

- ४०% ते ४९.९९% - तृतीय श्रेणी
- ५०% ते ५४.९९% - द्वितीय श्रेणी
- ५५% ते ५९.९९ % - उच्च द्वितीय श्रेणी
- ६०% ते ६९.९९% - प्रथम श्रेणी
- ७०% तथा उसके ज्यादा - विशेष प्राविण्य

एम. ए. हिंदी - विस्तारित पाठ्यक्रम

एम. ए. हिंदी पाठ्यक्रम के उद्देश :

१) छात्रों में साहित्य को समझने, उससे प्रेम करने की क्षमता बढ़ाना।

२) छात्रों में साहित्य के आस्वादन और मूल्यांकन की दृष्टि को बढ़ावा देना।

२) हिंदी साहित्य की प्राचीन व आधुनिक गद्य-पद्य विधाओं का तात्त्विक परिचय कराना।

४) साहित्यिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में विभिन्न साहित्य विधाओं के विकास का परिचय छात्रों को कराना।

५) छात्रों में साहित्यिक कृतियों का विवेचन, उनकी समीक्षा करने की दृष्टि विकसित करने का प्रयास करना।

६) हिंदी भाषा के गण्यमान् साहित्यकारों के साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व से छात्रों का परिचय कराना और उनके योगदान पर प्रकाश डालना, जिससे छात्रों में साहित्य सृजन की अभिलाषा अंकुरित, पल्लवितऔर फलित हो।

७) प्राचीन और आधुनिक भारतीय और पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांतों और आलोचना प्रणालियों का अध्ययन कराना।

८) हिंदी की व्यावहारिक उपयोगिता का परिचय कराना।

९) हिंदी के बहुमूल्य साहित्य के पठन-पाठन से छात्रों में अस्मिता का भाव जगाना।

१०) छात्रों को साहित्य पठन के साथ-साथ नैतिक मूल्यों के महत्त्व से परिचित कराना।

भाग १

प्रश्नपत्र १ - आधुनिक गद्य (H - 101) **अंक : १००**

१. **उपन्यास :**

विपात्र - ले. गजानन माधव मुक्तिबोध
प्रकाशक - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,
१८ इन्स्टिट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली - ११०००३
'चौथा संस्करण', १९८७

२. **कहानी :**

आधुनिक हिंदी कहानी - ले. दिनेश्वर प्रसाद
जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद. प्रथम संस्करण १९९६,
('घर' तथा 'ज्वारभाटा' को छोड़कर अन्य दस कहानियाँ)

१९) महादवी का गद्य - डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित

२०) महादेवी वर्मा - संपा. शचीरानी गुर्ट

२१) हिंदी रेखाचित्र - डॉ. हरवंशलाल शर्मा

२२) विविध विधाओं के प्रतिनिधि साहित्यकार : डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी - विनोदिनी सिंह

प्रश्नपत्र २ - प्राचीन काव्य (H - 102)

अंक : १००

उद्देश -

१) हिंदी के मध्यकालीन (भक्तिकाल और रीतिकाल) काव्यप्रवृत्तियों की जानकारी देना।

२) तत्कालीन कुछ प्रमुख कवियों की रचनाओं के प्रत्यक्ष अध्ययन द्वारा उक्त काव्य से परिचित कराना।

३) पाठ्यकवियों की कृतियों के आधारपर छात्रों की समीक्षण क्षमता वृद्धिंगत कराना।

पाठ्यक्रम में निर्धारित कवि -

१) मलिक मुहम्मद जायसी   २) कबीर

३) गोस्वामी तुलसीदास   ४) मीरा

५) बिहारी   ६) घनानंद

सूचनाएँ -

१) परीक्षाओं में संसदर्भ व्याख्या का अनिवार्य प्रश्न पूछा जाएगा।

२) निर्धारित कवियों की रचनाओं का अध्ययन तत्कालीन काव्य प्रवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में अपेक्षित है।

१) पद्मावत : मलिका मुहम्मद जायसी, संपादक - वासुदेवशरण अग्रवाल,
प्रकाशक - साहित्य सदन, चिरगाव, झांसी
(केवल मानसरोदक एवं नागमती वियोग खंड)

अध्ययनार्थ विषय :

१) प्रेमभाव   २) सौंदर्य-वर्णन

३) वियोग-वर्णन   ४) रहस्यभावना एवं दर्शन

५) प्रकृति चित्रण   ६) नारी चित्रण

७) लोकतत्त्व   ८) जायसी की काव्यकला

२) कबीर वाणी-सुधा - कबीर, **संपादक** - डॉ. पारसनाथ तिवारी,
प्रकाशक - राका प्रकाशन, इलाहाबाद

१. पद क्रमांक -

४, ९, १२, १४, २१, ४१, ५०, ५६, ५९, ६५ = १० पद.

द्वितीय खंड -

स्तुति - विरहानुभाव - पदक्रमांक - ६२, ६९, ७०, ७२, ७६.

राग सावन- ८१, ८३

पदक्रमांक - ८७, १०२, १२१, १२९, १३१, १४३, १४६, १५०, १५९, १६१, १६६, १७५, १९९ = २० पद.

कुल - ४० पद

अध्ययनार्थ विषय :

१. मीरा की मधुरा भक्ति

२. मीरा की प्रेमसाधना

३. मीरा की वेदनानुभूति

४. मीरा की रस योजना

सूचना -

१) संदर्भ ग्रंथ के लिए मीराबाई की पदावली में परिशिष्ट में सामग्री है।

२) हिंदी साहित्य के इतिहास की पुस्तकों में भी सामग्री मिल जाएगी।

३) निर्धारित ५० पदों में से संदर्भ व्याख्या का प्रश्न अनिवार्य रूप से पूछा जाएगा।

५) **बिहारी - रीति काव्यधारा - संपादक : डॉ. रामचंद्र तिवारी, डॉ. रामफेर त्रिपाठी**

प्रकाशक - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

(इस ग्रंथ से बिहारी के संपूर्ण छंद)

अध्ययनार्थ विषय -

१. रीतिसिद्ध कवि बिहारी

२. सौंदर्य चित्रण

३. बिहारी का संयोग-वियोग श्रृंगार निरुपण

४. बिहारी की नीति एवं भक्ति

५. काव्य सौंदर्य

६. भाषाशैली

७. बिहारी की अलंकार योजना

६) **घनानंद - रीति काव्यधारा - संपादक : डॉ. रामचंद्र तिवारी, डॉ. रामफेर त्रिपाठी**

प्रकाशक - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

(इस ग्रंथ से घनानंद के संपूर्ण छंद)

अध्ययनार्थ विषय -

१. घनानंद की प्रेमानुभूति

२. घनानंद की विरहानुभूति

३. घनानंद की भगवत् भक्ति

४. घनानंद की काव्य की विशेषताएँ

संदर्भग्रंथ :

१) मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य - डॉ. शिवसहाय पाठक

F2

उसके संबंध में भट्टनायक, अभिनवगुप्त, पंडितराज जगन्नाथ आचार्य विश्वनाथ तथा आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मतों की विवेचना। करुण रस की आस्वाद्यता। वर्तमान संदर्भ में रससिद्धांत।

३. **अलंकार सिद्धांत** - 'अलंकार' शब्द की व्युत्पत्ति, अलंकार की परिभाषा, अलंकार सिद्धांत का स्वरूप, अलंकार और रस, काव्य में अलंकार का स्थान

४. **रीतिसिद्धांत** - रीति शब्द की व्युत्पत्ति, रीति की परिभाषा, रीति के विविध पर्याय, रीति के गुण, रीतिभेद, रीति और शैली।

५. **ध्वनिसिद्धांत** - 'ध्वनि' शब्द की व्युत्पत्ति, ध्वनि की परिभाषा, ध्वनि और स्फोट सिद्धांत ध्वनि और शब्दशक्ति, ध्वनि के भेद-अभिधामूला लक्षणामूला, ध्वनि के आधारपर काव्य के भेद, ध्वनिसिद्धांत का महत्त्व।

६. **वक्रोक्ति सिद्धांत** - वक्रोक्ति की परिभाषा कुंतकपूर्व वक्रोक्ति विचार, वक्रोक्ति, सिद्धांत का स्वरूप - भेद और महत्त्व।

७. **औचित्य सिद्धांत** - औचित्य का स्वरूप, आचार्य क्षेमेन्द्र पूर्व औचित्य - विचार, आचार्य क्षेमेन्द्र का औचित्य विचार, औचित्य के भेद, अन्य सिद्धांतों के संदर्भ में औचित्य का महत्त्व।

२) **पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र**

१. **पाश्चात्य** - काव्यशास्त्र के विकासक्रम का संक्षिप्त परिचय।

२. **अरस्तू के काव्यसिद्धांत** - अनुकरण सिद्धांत, अनुकरण की व्याख्या, सिद्धांत का स्वरूप. अनुकरण के संदर्भ में प्लेटो और अरस्तू के विचारों का तुलनात्मक परिचय। विरेचन सिद्धांत : विरेचन (कर्थासिस) की अलग-अलग व्याख्याएँ। विरेचन - स्वरूप।

३. **उदात्त सिद्धांत** - लोंजाइनस द्वारा उदात्त की व्याख्या, सिद्धांत का स्वरूप, उदात्त के अंतरंग तत्त्व , बहिरंग तत्त्व, विरोधी तत्त्व। काव्य में उदात्त का महत्त्व।

४. **यथार्थवाद** - यथार्थ का स्वरूप, आदर्श और यथार्थ, यथार्थवाद के भेद, मनोविश्लेषणवादी यथार्थवाद, समाजवादी यथार्थवाद।

५. **अभिव्यंजनावाद** - क्रोचे की कलाविषयक धारणा अंतः प्रज्ञा, अंतः प्रज्ञा और अभिव्यंजना का नित्यसंबंध, अभिव्यंजना और कला का संबंध। अभिव्यंजनावाद और वक्रोक्ति सिद्धांत।

६. **प्रतीकवाद और बिंबवाद** - प्रतीकवाद का उद्भव। प्रतीकवाद की व्याख्या, प्रतीकों का वर्गीकरण, प्रतीकवाद का महत्त्व और सीमाएँ। हिंदी साहित्य पर प्रभाव। बिंब का अर्थ और प्रयोग। काव्य-बिंब का प्रयोजन। बिंब के आवश्यक गुण बिंबों का वर्गीकरण। बिंब और प्रतीक की तुलना।

७. **संप्रेषण सिद्धांत** - संप्रेषण सिद्धांत - स्वरूप और महत्त्व, रिचर्डस का योगदान।

८. **निर्वैयक्तिकता सिद्धांत** - इलियट की निर्वैयक्तिकतासंबंधी धारणा, परिवर्तित धारणा, व्यक्तिगत भावों का सामान्यीकरण। भारतीय काव्यशास्त्र के साधारणीकरण से तुलना।

९. **संरचनावाद** - स्वरूप, महत्त्व और सीमा।

२) सेवासदन

३) रंगभूमी

४) गबन

५) निर्मला

सूचनाएँ -

१) गोदान', 'गबन' और 'निर्मला' से ससंदर्भ व्याख्या का अनिवार्य प्रश्न पूछा जाएगा।

२) अन्य उपन्यासों की संक्षिप्त जानकारी अपेक्षित।

अध्ययनार्थ विषय -

१. प्रेमचंद जी के उपन्यासों में उठाई गई सामाजिक समस्याएँ

२. प्रेमचंद जी के उपन्यासों में नारी

३. प्रेमचंद जी के उपन्यासों में आम आदमी का चित्रण

४. प्रेमचंद जी का जीवन-दर्शन उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में।

५. उपन्यासों के नायक और उनका उपन्यासों में स्थान

६. समस्यामूलक उपन्यासों की परंपरा में प्रेमचंद के उपन्यास

७. उपन्यासों की भाषा

८. उपन्यासों में मनोविज्ञान

९. उपन्यासों में पात्रों का चरित्र - चित्रण

१०. उपन्यासों के सृजन का मूल उद्देश्य

११. उपन्यासों के कथानक

१२. उपन्यासों में अभिव्यक्त आदर्शोन्मुखी यथार्थ वाद

संदर्भग्रंथ -

१) हिंदी उपन्यास : उद्‌भव और विकास

२) उपन्यास का शिल्प - गोपाल राय

३) हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग - डॉ. त्रिभुवन

४) उपन्यास : स्थिति और गति - डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर

५) हिंदी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास - प्रेमबिहारीलाल भटनागर

६) हिंदी के आंचलिक उपन्यास - सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ - विमलशंकर नागर

७) हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद - डॉ. त्रिभुवनसिंह

८) हिंदी उपन्यास : एक सर्वेक्षण - रामविनोद सिंह

अध्ययनार्थ विषय -

१) सूरसागर सार

१. सूर की जीवनी एवं व्यक्तित्व
२. सूर का रचना संसार
३. सूर काव्य की दार्शनिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सामाजिक पृष्ठभूमि
४. सूर के काव्य में समाज और संस्कृति
५. सूर - काव्य में लोकतत्व
६. सूर का जीवन दर्शन
७. सूर की यशोदा
८. सूर का वात्सल्य वर्णन
९. सूर काव्य में बाल-मनोविज्ञान
१०. सूर की राधा और सूर के कृष्ण
११. सूर की भक्तिभावना और आध्यात्मिक चिंतन
१२. सूर का प्रकृति-चित्रण
१३. सूर का लीला वर्णन
१४. सूर की सौंदर्य भावना

२) भ्रमरगीत सार

१. भ्रमरगीत की दार्शनिक पृष्ठभूमि
२. सूरकाव्य में योग बनाम भक्ति
३. सूरकाव्य में विरह - वर्णन
४. सूरकाव्य में संयोग - वर्णन
५. सूरकाव्य रूप - वर्णन
६. भ्रमरगीत एक उपालंभ काव्य
७. सूर की गोपियाँ और सूर के उद्धव
८. सूर की काव्यकला और गीतात्मकता
९. सूर की भाषा और छंदविधान अलंकार
१०. सूरकाव्य में व्यंजना और वाग्वैदग्ध्य

संदर्भ ग्रंथ -

१) सूर - सौरभ - डॉ. मुंशीराम शर्मा
२) सूरदास और उनका साहित्य
३) भारतीय साधना और सूर साहित्य - डॉ. हरिवंशलाल शर्मा
४) सूर की काव्यकला - डॉ. मनमोहन गौतम
५) सूर - साहित्य - डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
६) सूर की भाषा - डॉ. प्रेमनारायण टंडन
७) कृष्णकाव्य और सूर - सांस्कृतिक संदर्भ - डॉ. प्रेमशंकर
८) सूरदास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
९) महाकवि सूरदास - आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
१०) सूरसाहित्य का छन्द - शास्त्रीय अध्ययन - डॉ. गौरीशंकर मिश्र

केवल निम्नलिखित ४ कवि व उनकी कविताएँ

१) अज्ञेय
२) शमशेर बहादुर सिंह
३) गजानन माधव मुक्तिबोध
४) रघुवीर सहाय

(५) **जहाँ शब्द हैं। -**

संपादक. डॉ. प्रभाकर माचवे, माचवे प्रकाशन,

ई - १८०, ग्रेटर कैलाश - II, नई दिल्ली - ११० ०४८

केवल निम्नलिखित २० कविताएँ

१) नया
२) स्वः
३) हिरण्मयेन पात्रेण सत्य स्थापिहितम् मुखम्।
४) समाज - परमेश्वर
५) घर
६) चीजें
७) महुआ
८) दो दल
९) बोध
१०) शक्ति भक्ति
११) वि-जड़ित
१२) पूजा
१३) विस्थापित
१४) एक नारियल के पेड़ से बातचीत
१५) टूटन
१६) संप्रति
१७) दो कवित्त
१८) नेहरू चाचा
१९) नहीं पराजय
२०) गतिरोध

सूचना : परीक्षा में निर्धारित पुस्तकों पर ससंदर्भ - व्याख्या का प्रश्न अनिवार्य होगा।

संदर्भ ग्रंथ -

१) कामायनी मे काव्य, संस्कृति और दर्शन : डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
२) कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ - डॉ. नगेन्द्र
३) कामायनी - कला और दर्शन - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
४) कामायनी पुनर्मूल्यांकन - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
५) कामायनी एक पुनर्विचार - गजानन माधव मुक्तिबोध
६) कामायनी की अलोचना प्रक्रिया - गिरिजा राय
७) नरेश मेहता का काव्य, संवेदना और शिल्प - अमियचंद्र पटेल
९) सुमित्रनंदन पंत - डॉ. नगेन्द्र
१०) कवि सुमित्रनंदन पंत - आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
११) सुमित्रानंदन पंत का नवचेतना काव्य - नेमनारायण जोशी

९) आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण ग्रियर्सन (अंतिम वर्गीकरण) और हरदेव बाहरी द्वारा किया गया वर्गीकरण, व्याकरणिक विशेषताएँ।

१०) हिंदी की उपभाषाएँ और बोलियां - वर्गीकरण पूर्वी हिंदी और पश्चिमी हिंदी की तुलना, खडी बोली, ब्रज और अवधी की व्याकरणिक विशेषताएँ

११) हिंदी का शब्दभंडार - तत्सम, तद्भव, अर्धतत्सम देशी, विदेशी

१२) हिंदी शब्दनिर्माण - उपसर्ग, प्रत्यय, समास

१३) हिंदी का व्याकरणिक स्वरूप और विकास : रूपरचना, लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के संदर्भ में हिंदी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूपों तथा अव्ययों का विकास।

१४) देवनागरी लिपि - विकास, विशेषताएँ और सुधार के प्रयत्न

संदर्भ ग्रंथ :

१) भाषाविज्ञान की भूमिका - डॉ.देवेन्द्रनाथ शर्मा

२) भाषाविज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

३) आधुनिक भाषाविज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

४) सामान्य भाषाविज्ञान - डॉ. वैष्णव नारंग

५) भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

प्रश्नपत्र ७ : हिंदी साहित्य का इतिहास (H - 203) अंक : १००

उद्देश्य -

१) छात्रों को युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधारपर हिंदी साहित्य के इतिहास के कालविभाजन और नामकरण का परिचय देना।

२) आदिकालन, भक्तिकालीन, रीतिकालीन व आधुनिक काल की प्रवृत्तियों, प्रतिनिधि कवियों और उनकी रचनाओं से परिचित कराना।

३) हिंदी गद्य के आविर्भाव के प्रधान कारणों व परिस्थितियों का परिचय कराना।

४) हिंदी की प्रमुख गद्यविधाओं के विकासक्रम का परिचय एवं प्रमुख गद्यकारों का परिचय देना।

५) आधुनिक हिंदी कविता के विकास के प्रमुख चरणों की प्रवृत्तियों, उपलब्धियों तथा सीमाओं से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम

१) हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा का सामान्य परिचय।

२) हिंदी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन, कालविभाजन के आधार, भाषा, साहित्य, भाषाक्षेत्र प्रथम साहित्यकार.

२. **हिंदी कहानी साहित्य का विकास** - प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, नई कहानी, साठोत्तर कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, संबंधित युग अथवा धारा के कहानी साहित्य की कथ्य एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय। प्रधान कहानीकारों का विशेष परिचय - प्रेमचंद, प्रसाद, जैनेन्द्रकुमार कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, उषा प्रियवंदा, ज्ञानरंजन।

३. **हिंदी नाटक का उद्भव और विकास** - भारतेन्दु पूर्व युग, भारतेन्दु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्त युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग, (संबंधित युग के नाट्य साहित्य की कथ्य एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय) प्रधान नाटककारों भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रसाद, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश लक्ष्मीनारायण मिश्र, लक्ष्मीनारायण लाल, शंकर शेष.

४. **हिन्दी निबंध का विकास** - भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग, (संबंधित युग के आलोचना साहित्य की सामान्य विशेषताएं)। प्रधान निबंधकारों का सामान्य परिचय - पं. प्रताप नारायण मिश्र, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आ. हजारीप्रसाद द्विवेदीय कुबेरनाथ राय, हरिशंकर परसाई।

५. **हिंदी आलोचना का उद्भव और विकास** - भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधितह युग के आलोचना साहित्य की सामान्य विशेषताओं का परिचय) - आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी, आ. रामचंद्र शुक्ल, आ. नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. नामवरसिंह.

(ग) आधुनिक हिंदी काव्य का विकास -

१. भारतेंदुयुगीन हिंदी कविता की सामान्य प्रवृत्तियां। भारतेंदुयुगीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय : भारतेंदु हरिश्चंद्र, पं. बदरीनारायण चौधरी, प्रेमघन।

२. द्विवेदीयुगीन हिंदी काव्य की सामान्य प्रवृत्तिया - द्विवेदीयुगीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय, मैथिलीशरण गुप्त, पं. श्रीधर पाठक.

३. राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा की कविता की सामान्य प्रवृत्तियाँ प्रधान कवि माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर

४. छायावादी कविता : उद्भव के कारण, प्रमुख प्रवृत्तियां, सीमाएं, प्रमुख छायावादी कवि, पंत, प्रसाद, निराला, महादेवी

५. प्रगतिवादी कविता - उद्भव के कारण, सीमाएं सामान्य प्रवृत्तियां, प्रधान कवि पंत, नागार्जुन, निराला, केदारनाथ अग्रवाल

६. प्रयोगवादी कविता - उद्भव के कारण प्रमुख प्रवृत्तियां

७. नई कविता - प्रमुख प्रवृत्तियां : प्रमुख कवि - अज्ञेय मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, नरेश मेहता, रघुवीर सहास.

८. साठोत्तर कविता - साठोत्तर कविता की सामान्य प्रवृत्तियां, साठोत्तरकाल के प्रमुख कवि - धूमिल, दुष्यंतकुमार, केदारनाथ सिंह.

३) अनुवाद के विभिन्न रूप, प्रक्रियाएँ, सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष को अवगत कराना।

४) अनुवाद की समस्याएं, एवं आवश्यकता को रेखांकित करना।

पाठ्यक्रम -

१) अनुवाद का स्वरूप : परिभाषा महत्त्व, व्याप्ति, अनुवाद कला या विज्ञान

२) अनुवाद प्रक्रिया : मूलभाषा का पाठबोधन और व्याख्या, लक्ष्यभाषा में अभिव्यक्ति, अर्थयोग, अर्थहानि, अर्थांतरण, पुनस्सर्जन।

३) अनुवाद का मौखिक तथा लिखित स्वरूप, महत्त्व एवं वर्तमानकाल में उसकी उपयोगिता, अनुवादक की योग्यता.

४) अनुवाद के प्रकार - प्रक्रिया के आधार पर - शब्दानुवाद -भावानुवाद

छायानुवाद, रूपांतरण, गद्य-पद्य के आधारपर गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, विद्या के आधारपर नाट्यानुवाद, कव्यानुवाद, कथानुवाद आदि।

५) अनुवाद कार्य में सहायक साधन - द्विभाषिक कोष, त्रिभाषिक कोष, वर्णनात्मक कोष, सूचियाँ कोष, विषय विशेष के ग्रंथ, संगणक उक्त साधनों के उपयोग में सावधानी।

६) अनुवाद और लिप्यंतरण : आवश्यकता, समस्याएं

७) अनुवाद और भाषाविज्ञान : भाषाविज्ञान के अंग और अनुवाद

अनुवाद और रूपविज्ञान, अनुवाद और वाक्यविज्ञान, अनुवाद और अर्थविज्ञान.

८) अनुवाद का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष - समाजविशेष.

एवं संस्कृति विशेष के संदर्भ में उपस्थित सामग्री में देशीय संदर्भ एवं अंतर के कारण अनुवाद कार्य में उत्पन्न समस्याएं।

९) रचनात्मक साहित्य के अनुवाद का स्वरूप आवश्यकता, समस्याएं और सीमाएं। वाणिज्य और व्यवसाय के क्षेत्र में सामग्री के अनुवाद का स्वरूप, आवश्यकताएं, समस्याएं।

१०) बँक तथा अन्य कार्यालयों में हिंदी, अनुवाद की सामग्री का स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएं।

११) कम्प्यूटर अनुवाद की आवश्यकता, समस्याएं, सीमाएं।

१२) अनुवाद की समस्याएं - मुहावरों और कहावतों का अनुवाद, अलंकारों का अनुवाद, काव्यानुवाद, नाटकानुवाद.

१३) अनुवाद कार्य में शैली विचार - अनुवाद की शैली का स्वरूप एवं विशेषता, विविध शैलियों का निर्वाह अथवा परिवर्तन की संभावनाएं, प्रतिबद्धता एवं स्वतंत्रता का प्रश्न.

१४) अनुवाद समीक्षा, आवश्यकता और निकष।

संदर्भ ग्रंथ :

१) अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा - डॉ. सुरेशकुमार

६) पारिभाषिक शब्दावली - अर्थ, आवश्यकता, शब्दनिर्माण की विभिन्न प्रवृत्तियाँ, शब्दनिर्माण की प्रक्रिया .

७) राजभाषा हिंदी विषयक सरकारी नीति - आरंभ से आजतक विकास के चरण। विविध सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति।

८) कार्यालयी - पारिभाषिक शब्दावली, वाक्य एवं वाक्यांश वाक्यों में प्रयोग।

९) व्यापारिक पत्रलेखन -स्वरूप प्रकार।

(क) पूछताछ - माल, सुविधाएं, मूल्यसूची, शर्तें

(ख) आदेश - माल के आदेश प्राप्त कररणे - देने रद्द कररने आदि संबंधी पत्राचार।

(ग) संदर्भ - या परिचय पत्र।

(घ) शिकायती पत्र - माल न भेजने, कम भेजने, घटिया या खराब माल, खराब वेष्टन, अधिक मूल्य आदीसंबंधी पत्राचार.

(च) तकादे या भुगतान संबंधी पत्राचार

(छ) साखपत्र

(ज) आढत या एजन्सी संबंधी पत्र

१०) आवेदन या प्रार्थना पत्र

(क) नौकरी के लिए

(ख) कार्यालयीन छुट्टी (छुट्टियों के विविध प्रकार) स्थानांतरण, स्थायीकरण, पदनाम, कार्यपरिवर्तन सरकारी मकानसंबंधी आदि

(ग) वेतन व धनसंबंधी - वेतन, वेतनवृद्धि, अतिरिक्त वेतन, भत्ते, समयोपरि भत्ते, विशेष वेतन, पदोन्नती वरिष्ठता, भविष्यनिधी, अग्रिम धन एवं विविध भुगतानों से संबंधित आवेदन पत्र।

११) सरकारी पत्राचार - स्वरूप, प्रकार, प्रारूप, पत्र, परिपत्र, ज्ञापन कार्यालय, आदेश, सरकारी पत्र, अनौपचारिक पत्र, पृष्ठांकन, अधिसूचना, ससंस्ताव, प्रेस विज्ञाप्ति, सार-टेलेक्स, मितव्यय पत्र, अनुस्मारक, सूचना.

१२) टिप्पणीलेखन - उद्देश्य, सिद्धांत, स्वरूप, विशेषताएं और प्रकार, सूक्ष्म टिप्पणी, संपूर्ण टिप्पणी, अनुभागीय टिप्पणी, नित्यक्रमिक टिप्पणी आदि।

१३) संक्षेपण - उद्देश्य, विविध प्रकार, स्वतंत्र संक्षेपण प्रवहनमान संक्षेपण, तालिका संक्षेपण, स्वयंपूर्ण संक्षेपण। अनौपचारिक टिप्पणी - आनुषंगिक टिप्पणी।

संदर्भ ग्रंथ -

१) राजभाषा हिंदी - डॉ. कैलासचंद्र भाटिया

२) राजभाषा हिंदी - भोलानाथ तिवारी